Sunita Kumari
Guest Asst Prof
Dept of H.Sc
BA-Part-II

गृह व्यवस्था की आवश्यकता एवं उद्देश्य

Dt.11/02/2022

(Need and Aims of Home Management)

यह सर्वविदित है कि घर अथवा परिवार की सुचारु रूप से व्यवस्था करना ही गृह प्रबन्ध कहलाता है। यह प्रबन्ध परिवार के पास उपलब्ध साधनों का सदुपयोग करते हुए किया जाता है। परिवार की गृह व्यवस्था पर ही परिवार के सदस्यों का स्वास्थ्य एवं कार्य कुशलता निर्भर करती है। गृह व्यवस्था के द्वारा ही सदस्यों में स्नेह, त्याग, धर्म, एवं कला की भावना आती है। गृह-व्यवस्था की आवश्यकता अतीतकाल में इसलिए अनुभव की गई क्योंकि साधन सीमित थे और अनेक कार्य करने पड़ते थे, साधनों में कुछ वृद्धि हुई परन्तु आवश्यकताओं की वृद्धि कई गुना हुई धीरे-धीरे समस्याएँ अधिक जटिल होती गई तथा सीमित साधनों से अनेक साधनों को पूरा करने के लिए गृह-व्यवस्था की आवश्यकता एवं महत्व और भी अधिक बढ़ गया।

वास्तव में सीमित आय को ध्यान में रखते हुए परिवार की जरूरतों को पूरा करने हेतु व्यय का नियोजन कहलाता है। पारिवारिक आवश्यकताओं को सुचारु रूप से पूर्ति करने के लिए गृह-प्रबन्धन की आवश्यकता होती है। गृह-प्रबन्ध द्वारा परिवार के समस्त पक्षों का समुचित विकास होता है। गृह व्यवस्था करने के लिए किसी परिवार में विभिन्न सिद्धान्तों का प्रयोग होता है।

गृह-व्यवस्था के उद्देश्य :—

गृह-व्यवस्था के मुख्यतः तीन उद्देश्य होते हैं:—

(1) सौन्दर्य (Beauty):— सौन्दर्य के प्रति प्रत्येक व्यक्ति का अनुराग रहता है। प्रत्येक मनुष्य सुन्दर दृश्य, वस्तु आदि को देखकर आकर्षित होता है। प्रत्येक मनुष्य सौन्दर्य को भिन्न-भिन्न दृष्टि से देखता है तथा उनके सौन्दर्य मापने का मापदंड भी अलग-अलग होता है। सौन्दर्य को मापने का मापदंड निर्धारित नहीं है। कुछ व्यक्ति हरियाली को देख आनन्द की अनुभूति प्राप्त करते हैं तो कुछ को सूखे रेगिस्तान में सौन्दर्य दिखाई पड़ता है।

सौन्दर्य का साधारण अर्थ सुन्दरता से है जिसे देखकर हृदय प्रसन्न होता है तथा जिसकी अमिट छाप दिल और दिमाग पर पड़ती है। गृह व्यवस्था में सौन्दर्य-कला के विभिन्न सिद्धान्तों को प्रयोग में लाया जाता है।

(2) अभिव्यंजकता (Expressiveness):— कला द्वारा व्यक्ति अपने विचारों को प्रकट करता है। गृह-सज्जा में प्रयुक्त साधन एवं विधि को देखकर उस परिवार के आदर्शों एवं मान्यताओं को समझा जा सकता है तथा परिवार वालों की रुचियों के विषय में जाना जा सकता है। अतः दीवारों को कैलेंडर, चित्र या अन्य वस्तुओं से सजाकर सजाया जाता है।

(3) क्रियात्मकता (functionalism):— गृह-सज्जा ही सौन्दर्य का ही बोध नहीं कराती वरन् परिवार के विभिन्न सदस्यों की आवश्यकताओं को भी पूरा करते हैं। जिस प्रकार मकान में कमरों की आवश्यकताओं को देखते हुए गृह-व्यवस्था एवं गृह-व्यवस्था करते योजना बनाई जाती है उसी प्रकार परिवार के सदस्यों की समय सीमित स्थान में ही व्यवस्था की जाती है। स्थान सीमित आवश्यकतानुसार फर्नीचर का रखने पर भी क्रियात्मकता को देखते हुए फर्नीचर के चुनाव करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में बहुप्रयोजनीय फर्नीचर अधिक लाभप्रद होते हैं। विशेष कर मुड़ने वाले फर्नीचर प्रयुक्त करने से कमरों को आवश्यकतानुसार विभिन्न कामों में लाया जा सकता है।